श्री शत्रुंजय-मुक्ति
सा विद्या या विमुक्तये
सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

२

सम्यग्ज्ञान परिचय

Answer-Sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

९

शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	पद्मद्रह
(२)	असूयावचन
(३)	आतपनामकर्म
(४)	अनुग्रह
(५)	शिक्षाव्रतों
(६)	महाविदेह
(७)	श्रमणजीवन
(८)	धर्मदेशना
(९)	निर्मलता
(१०)	लब्धिपर्याप्त
(११)	परलोक
(१२)	भोगान्तराय
(१३)	स्वाध्याय
(१४)	अव्यापार पौषध
(१५)	अनुशासन
(१६)	रूपानुपात
(१७)	आदेय नामकर्म
(१८)	पुरुषार्थ
(१९)	कायदुःप्रणिधान
(२०)	उपधान

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	विद्या
(२)	दुर्लभ
(३)	वीर्यान्तराय
(४)	पौषध
(५)	मनोदुःप्रणिधान
(६)	वैताढ्यपर्वत
(७)	प्रायश्चित
(८)	तप
(९)	सौधर्म देवलोक
(१०)	तीर्थंकर नामकर्म
(११)	मेतार्य मुनि
(१२)	धर्मकथा
(१३)	समता
(१४)	धर्मदास
(१५)	व्रतोंसे

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	परिवार
(२)	नदियाँ
(३)	साधु
(४)	उत्तमध्वजा
(५)	हजार
(६)	दो उच्च भेद
(७)	वनवासिका
(८)	सीतोदा
(९)	३५० (अग्निकाय)
(१०)	अपनी
(११)	खेदरहित
(१२)	सर्वज्ञ
(१३)	चिन्हवाले
(१४)	मस्तक
(१५)	साथ
(१६)	तीर्थंकर
(१७)	देनेवाले
(१८)	सुखकारी
(१९)	दुःखी
(२०)	हर्ष प्रदान करो

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	७	(६)	२
(२)	८	(७)	३
(३)	६	(८)	५
(४)	९	(९)	१
(५)	१०	(१०)	४

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	५६०००
(२)	४८
(३)	२०००
(४)	५
(५)	३½ हाथ
(६)	४८
(७)	३६ वर्ष
(८)	८
(९)	१०,६४०००
(१०)	१२

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	१४
(२)	✓	(२)	७
(३)	✓	(३)	२४
(४)	× (✓ overwritten)	(४)	१०
(५)	✓	(५)	४
(६)	×	(६)	१६
(७)	×	(७)	५
(८)	✓ (× overwritten)	(८)	१८
(९)	×	(९)	२२
(१०)	✓	(१०)	२०

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. तीर्थंकर नामकर्म के बारे मे समझाइये → तीर्थंकर नामकर्म के उदय से जीव त्रिभुवन मे पुजनीय बनता है। जिसका उदय केवलज्ञानी भगवन्तोंको होता है। केवलज्ञान की अनमोल संपदा को उपलब्ध करके जिस कर्म के उदय से आठ महाप्रातिहार्यादि ~~अतिशय~~ अतिशयोंकी प्राप्ति होती है, त्रीभुवन मे पुजनीय बनते है और पुजनीय धर्मतीर्थ की स्थापना करते है, उसे तीर्थंकर नामकर्म कहते है।

२. पौषध व्रत के भेद समझाइये → जिसको करनेसे जीवधर्म की पुष्टि को धारण करता है वो पौषधव्रत कहलाता है, वो अवश्य अष्टमी आदि पर्व दिनो मेकरना चाहिए। पौषध व्रत के चार भेद है। (1) सर्व चार प्रकार केआहार का परिहार करना, उसे आहार पौषध कहा जाता है। (2) सर्वथा-प्रकार से स्नान आदिके द्वारा शरीर की शुश्रुषा यानि शोभा करने का परिहार करना वो शरीर सत्कार पौषध जानना। (3) सर्व प्रकार से औदारिक वैक्रिय मैथुन का परिहार करना वो ब्रम्हचर्य पौषध जानना। (4) पापसहित जो होता है, उसेसावद्य कहते है, ऐसे व्यापार का जो परिहार करना उसे अव्यापार पौषध कहा जाता है।

३. सामायिक व्रत की महत्ता बतलाइये → ऐसे धीरे धीरे आगे बढनेपर जीव साधुजीवन के आस्वादन रूप चार शिक्षाव्रतो मे प्रवेश करनेको तरसता है। इन शिक्षा व्रतो मे प्रवेश सामायिक व्रत के द्वारा होता है। जिसमे समता की आय होती है, उसे सामायिक कहने मे आता है। जब जैसे-जैसे सामायिक की आराधना मे आगे बढता है, वैसे वैसे उसके जीवन मे समता की वृध्दि होनी दिखनी चाहिये। समता आये तो ही सामायिक की सच्ची सफलता है, एक भी शुध्द सामायिक आत्मा को नरक आदि दुर्गति मेसे बचाता है।

४. स्वाध्याय किस तरह से करना चाहिये — श्रावक अपनी बुध्दिके अनुसार पूर्व मे सिखाये हुये दिनकृत्यादिक श्रावकविधि, जीव-विचार, नवतत्व, कर्मग्रंथ, बारहभावना, पुण्य प्रकाश आदि सुत्रोंका परावर्तनारूप स्वाध्याय करे, स्वाध्याय दरम्यान उच्चारित सुत्र अथवा शब्दोके अर्थ कि विचारणा कर स्वयं के आत्मा को अनुरूप हित शिक्षा देअपने कोस्वयं कोसमझाकर संसारपर के वैराग्य को मजबूत बनाये और धर्माराधना मे खुद कोअधिक से अधिक उद्यमवंत करे इसप्रकार केस्वाध्याय सेस्वाध्याय करनेवाला एवं स्वाध्याय सुननेवाला दोनोका अंत मे कल्याण ही होता है।

५. देसावगासिक व्रत के अतिचार कोनसे है? किसी एक को समझाइये → (1) आनयनप्रयोग अतिचार (2) प्रेषणप्रयोग अतिचार (3) शब्दानुपातअतिचार (4) रूपानुपात अतिचार (5) बाह्य पुद्गल प्रक्षेपअतिचार
देसावगासिक करते हुये नियम की हुई भूमिका से बाहर की कोई चीज हो, उसकी गरज पडने पर वहा से किसी दुसरे के पास से वो वस्तु मंगाये वो प्रथम आनयन प्रयोग अर्थात आनयन वो कोई चीज को किसी जगह से अपने पास मंगवाना, उसकी योजना की वो आनयनप्रयोग अतिचार जानना।